बैगा जनजाति की लोककथा सोनभद्र जनपद के विशेष सन्दर्भ में ।

Folktale of Baiga tribe with special reference to Sonbhadra district.

डॉ० मनोज कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर समाजशास्त्र
उ0 प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविधालय, प्रयागराज

सारांश

भारतीय समाज में विभिन्न जनजातियों का पाया जाना हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। आधुनिक युग की खोज उपभोगवाद पर आधारित है। किन्तु आदिम इतिहास के संदर्भ में आदिम जनजातीयों का अध्ययन करना भी आधुनिक समाज की आवश्यकता है। ये आदिम जनजातिय जंगलों में निवास करती है, जल, जंगल, जमीन ही इनका जीवन है परन्तु आधुनिकता की चकाचौंध से कोसों दूर है। कभी - कभी ऐसा लगता है कि ये जनजातिय अपने जंगली वातावरण में ही मदमस्त जीवन यापन करने के लिए बनी है। बैगा जनजाति जितनी प्राचीन जनजाति है उतनी ही प्राचीन बैगाओं की संस्कृति भी है। बैगा जनजाति अपने संस्कृति को संजोये हुए है। इनका रहन-सहन, खान-पान अत्यंत सादा होता है। बैगा जनजाति के लोग वृक्ष की पूजा करते है तथा बूढ़ा देव एवं दूल्हा देव को अपना देवता मानते है। बैगा झाड़-फूँक एवं जादू-टोना में विश्वास करते है। इनकी वेश-भूषा अत्यंत अल्प होती है। बैगा पुरुष मुख्य रूप से एक लंगोट तथा सर पे गमछा बाँधते है, वहीं बैगा महिलाएं एक साड़ी का प्रयोग करती है। वर्तमान समय में सोनभद्र जनपद के क्षेत्रों में रहने वाले बैगा जनजाति के नौजवान युवक शर्ट- पैंट का प्रयोग करने लगे है। बैगा जनजाति की महिलाएं आभूषण प्रिय होती हैं। बैगा महिलाएं आभूषण के साथ-साथ गोदना भी गुदवाती है। इनकी संस्कृति में गोदना का अत्यधिक महत्व है। बैगा महिलाएं शरीर के विभिन्न हिस्से में गोदना गुदवाती हैं। आधुनिकता के दौर में सोनभद्र जनपद के बैगा जनजाति की संस्कृति में भी आधुनिकता का समावेश हो रहा है।

मुख्य शब्द- जनजातियां, लोककथा, देवी देवता, आत्मविश्वास, संस्कृति, सामाजिक परंपराएं, ओझा या शमन

भूमिका

भारत में कुछ जनजातियां ऐसी भी हैं, जो आर्यों के आगमन के बाद यहां बाहर से आई हैं और स्थाई रूप से यहां बस गई है। इन जनजातियों का अपना अलग धर्म होता है, अपनी अलग संस्कृति होती है, अलग सभ्यता होती है,अलग-अलग रीति-रिवाज होते हैं, उनका रहन-सहन आचार विचार और भी अन्य जातियों से भिन्न होती है, किंतु इसका यह अर्थ नहीं है कि भारत की जनजातियां इस देश के प्रमुख धर्म हिंदू, इस्लाम, इसाई, बौद्ध धर्म को नहीं मानती वास्तव में इस देश की अधिकांश जनजातियां तो हिंदू धर्म,इस्लाम धर्म,इसाई धर्म,बौद्ध धर्म को मानती है। इन प्रमुख धर्मों को मानते हुए भी जनजातियों के कुछ देवी देवता अपने अलग होते हैं जिनकी पूजा का विधि विधान भी भिन्न-भिन्न होते हैं। इनके तीज-त्यौहार भी कुछ अलग होते हैं, जिन्हें यह अपने अलग-अलग ढंग से मनाते हैं। इन जनजातियों की अलग अलग सामाजिक परंपराएं होती है। और हर जनजाति के अपने अलग-अलग विश्वास व आत्मविश्वास भी होते हैं। प्रत्येक जनजाति की अपनी अलग लोककथा होती है, जिससे उनकी पहचान और उनकी विशेषता की पहचान की जाती है। इनकी भाषा और बोली अलग-अलग होती है। कुछ जनजातियों का साहित्य बड़ा धनी पाया जाता है। प्रायः सभी जनजातियों का

अपना अलग संगीत होता है। अलग लोकगीत होते हैं और अलग-अलग लोकनृत्य होते हैं। इन जनजातियों के नर नारी दोनों मिलकर लोकगीत गाते हुए लोक नृत्य करते हैं, और मस्त रहते है। इनके लोक नृत्य तथा लोक संगीत बड़ा उच्च कोटि के होते हैं जो हमारे देश की उत्तम निधि और उत्कृष्ट धरोहर संप्रदा है। विश्व में बहुत कम देश होंगे जहां भारत जैसे विशाल देश में इतनी अधिक जनजातियां पाई जाती हैं और जिनकी संस्कृति और लोककथा इतनी प्राचीन संपन्न उत्कृष्ट विद्यमान हो।

बैगा जनजाति की उत्पत्ति के संबंध में ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है। रसेल, ग्रियर्सन आदि ने इन्हें भूमिया, भूईया का एक अलग हुआ समूह माना है। जबकि एक किवदन्ति के अनुसार ब्रम्हाजी ने सृष्टि की रचना की तब दो व्यक्ति उत्पन्न किये। एक को नागर (हल) पकड़ाया यह नागर हल लेकर खेती करने लगे जो गोंड कहलाया। दूसरे को टंगिया (कुल्हाडी) दिया। यह कुल्हाड़ी लेकर जंगल काटने चला गया, चूंकि उस समय वस्त्र नहीं था, अतः यह नंगा बैगा कहलाया। इनके वंशज बैगा कहलाए। दूसरी किवदंतियों के अनुसार बैगाओं को रामायण काल में मध्य क्षेत्र की स्वास्थ सुरक्षा का भार सौंपा गया था। इसी कारण इन लोगों को 'वैद्य' कहा जाता था, किन्तु 'वैद्य' शब्द अपभ्रंश होकर कालांतर में 'बैगा' में परिवर्तित हो गया।

वर्तमान समय में बैगा जनजाति के निवास क्षेत्रों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि आज भी अधिकतर बैगा पारंपरिक रोगोपचार कार्य से जुड़े हुए है। यह कार्य बैगाओं को विरासत में प्राप्त हुआ है। बैगा औषधि ज्ञान को किताबों से नहीं पाते बल्कि पीढ़ी दर पीढ़ी अपने वंशजों से प्राप्त करते है। बैगा अपने औषधि ज्ञान को गुरु शिष्य परंपरा के द्वारा नई पीढ़ी को प्रदान करते है। यह परंपरा सदियों से चली आ रही है।

पूर्व मे हुये अध्ययन - इसी प्रकार 1867 ई० में कैप्टन थामस ने बैगा जनजाति के बारे में लिखा है कि बैगा जनजाति बहुत ही पिछड़ी अवस्था में है और सभ्य मनुष्य के संपर्क में आने से डरती है। कर्नल वार्ड की मंडला सेटलमेंट रिपोर्ट (1870 ई०) से जानकारी मिलती है कि ये जनजाति जंगली अवस्था में रहती है और अपने समूह के साथ स्वतंत्र रूप से रहना पसंद करती है।

1872 ई० में कैप्टन जे० फोरसिथ द्वारा लिखित पुस्तक 'द हाइलैंड आफ सेन्ट्रल इंडिया' में बैगा जनजाति के बारे में उल्लेख किया गया है कि ये जनजाति दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों में निवास करते है। इस जनजाति के पुरुष केवल एक लम्बा लंगोट धारण करते है, इसके बाल कोयले की तरह काले होते है। इनके कंधो पर तीर-कमान व कुल्हाड़ी टंगे होते है। सन 1939 ई० में वेरियर एल्विन की पुस्तक 'द बैगा' में बैगा जनजाति के बारे में विस्तृत विवरण प्राप्त होता है। इस पुस्तक में बैगा जनजाति के जीवन से संबंधित प्रत्येक पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है इसके अनुसार बैगा जनजाति आदिम जनजाति है और यह जनजाति एकांत जीवन निर्वाह करना पसंद करती है।

इसी प्रकार बैगा जनजाति के आर्थिक पहलुओं का विवरण डी०एस० नाग ने सन 1958 ई० में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'ट्राइबल इकोनामी (ए स्टडी ऑफ द बैगा)' में किया है। इस प्रकार ऐतिहासिक अवलोकन से ज्ञात होता है कि बैगा जनजाति एक आदिम जनजाति है।

सन 1916 ई० में प्रकाशित 'द ट्राइब्स एंड कास्ट्स ऑफ द सेन्ट्रल प्रोविन्स ऑफ इंडिया' में रसेल एवं हीरालाल ने बैगा जनजाति के बारे में काफी वर्णन किया है। इनके अनुसार बैगा आदिम द्रविड़ समूह की जनजाति है, जो मध्य भारत के मंडला, बालाघाट एवं बिलासपुर जिले के सतपुड़ा पर्वत श्रृंखलाओं में निवास करती है तथा इनके निवास स्थान ऊँचे तथा घने जंगलों में होते है जहाँ पहुँचने के लिए एक मात्र पगडण्डी दिखाई देती है। इस कारण से ये कभी-कभी दिखाई देते है जब उन्हें बनिए या विक्रेता से काम होता है।

सन 1931 ई० में डब्लू०एच० शूबर्ट ने 'सुपरिटेंडेंट ऑफ सेन्सस ऑपरेशन, सेन्ट्रल प्रोविसन एंड बरार' में बैगा जनजाति के सम्बन्ध में उल्लेख किया है कि बैगा अब केवल लंगोट न पहनकर कुछ कपड़ों का भी प्रयोग करने लगे है और धीरे-धीरे इनके जीवन शैली में परिवर्तन दिखाई दे रहा है।

लोककथा एवं किवदंतिया

मानव समाज करोड़ो वर्षों की विकास यात्रा से गुजरता हुआ वर्तमान समाजिक व्यवस्था तक पहुँचा है। भारतीय समाज के संदर्भ में देखें तो हमेशा से ही विभिन्न जातियों के उत्पत्तियों के पीछे आलौकिक या धार्मिक प्रभाव देखने को मिलता है। देवी उत्पत्ति का सिद्धांत भारतीय जातियों में आम है। बैगा जनजाति भी अपनी उत्पत्ति को इस दैवीय सिद्धांत से व्यक्त करती है। बैगा जनजाति में अपनी उत्पत्ति को लेकर विभिन्न लोक कथा प्रचलित हैं।

जनजातियों में भी अपनी स्वयं की उत्पत्ति को लेकर अनेक मिथकीय कहानियाँ प्रचलित है। अनेक इतिहासकारो, समाजशास्त्रीयों एवं मानव वैज्ञानिकों ने अपने अपने विचार व्यक्त किये है। बैगा जनजाति में भी अपने उत्पत्ति को लेकर अनेक लोक कथाएं विद्यमान है। ये लोक कथाएं क्षेत्र व उपजातियों के वर्गीकरण के अधार पर परिवर्तित होते रहते है। बैगा जनजाति आज भी प्रकृतिक वातावरण में प्रकृति के नजदीक रहना पसंद करते है। मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ़ में स्थित मैकल पर्वत इनका प्रमुख स्थान है बैगा जनजाति को राष्ट्रपति का दत्तक पुत्र कहाँ जाता है बैगा जनजाति अपने सांस्कृतिक पहचान के लिए जानी जाती है। बैगा जनजाति में उनकी उत्पत्ति सम्बंधी अनेक किवदंतियाँ विद्यमान है जैसे-'प्राम्भ में भगवान ने नागा बैगा और नागी बैगिन को बनाया, नागा बैगा और नागी बैगिन जंगल में रहने चले गये। कुछ समय पश्चात दोनों की दो संताने हुई। पहला संतान बैगा और दूसरा संतान गोंड़। दोनों संतानों ने अपने बहनों से विवाह कर लिया। आगे चलकर मनुष्य जाति की उत्पत्ति इन्ही दोनों दम्पत्तियों से हुई। पहले दंपत्ति से बैगा हुए और दूसरे दंपत्ति से गोंड़ उत्पन्न हुए। बैगा जनजाति अपने आदि पुरुष नागा बैगा को मानते है किन्तु ऐतिहासिक तथ्यों के अभाव होने के कारण नागा बैगा के निवास एवं उत्पत्ति को प्रमाणित करना अत्यंत मुश्किल है। बहुत समय पहले चारो ओर समुद्र था उसमे जल ही जल था एक कमल का फूल और कुछ पत्ते थे कमल में देवता गण बैठते थे। एक दिन हवा और पानी एक साथ आया और कमल और पत्तों में बैठे देवतागण भीग गये जिससे उन्हें गुस्सा आ गया तब ब्रम्हा जी ने अपने मन में खुब सोचा विचारा और समुद्र के पानी पर पृथ्वी बनाने की सोची, परंतु उस समय पृथ्वी का कही भी पता नहीं था। समुद्र में एक जम्बू द्वीप था जिसमे नागा बैगा निवास करता था सभी देवता गण उनके पास गये, उन्होने नागा बैगा से विनती की कि वह धरती का पता लगा कर आये तब नागा बैगा ने वचन दिया था कि वह धरती का पता जरूर लगा कर आयेगा। पहले धरती नहीं थी चारो तरफ जल था। एक दिन ब्रम्हा जी ने जल में धरती बनाई उस समय धरती फोड़ कर दो साधु निकले। पहला साधु ब्राम्हाण व दुसरा साधु नागा था। ब्रम्हा ने ब्राम्हण को लिखने पढ़ने के लिए कागज थमा दिया और नागा बैगा को टंगिया दे दिया ब्रम्हा ने नागा बैगा को कोदो कुटकी देकर खेती करने का आदेश दिया तब से बैगा जंगल काट कर खेती करती है।

इस जनजाति के उत्पत्ति के सम्बंध में अनेक मिथक प्रचलित है जो अपने उत्पत्ति के सम्बंध में अनेक प्रमाण प्रस्तुत करते है, किन्तु इसके ऐतिहासिक प्रमाण प्राप्त नहीं होते। विभिन्न विद्वानों के ग्रंथों के अध्ययन से कुछ जानकारी प्राप्त होती है- जैसे रसेल एवं हीरालाल के अनुसार बैगा जनजाति छोटा नागपुर की आदिम जनजाति भुईयां का एक अंश है जिसे बाद में बैगा कहा जाने लगा। भुईयां धरती का समानार्थी शब्द है, भुईयां धरती से सम्बन्ध रखने के कारण इस क्षेत्र के जनजातियों में प्रारंभ से ही बैगाओं का महत्वपूर्ण स्थान है।

अध्ययन क्षेत्र

बैगा जनजाति द्रविड़ समूह की एक आदिम जनजाति है। यह जनजाति भारत की अत्यंत ही प्राचीन जनजातियों में से एक है।'बैगा' का अर्थ होता है- "ओझा या शमन" इस जाति के लोग झाड़-फूँक और अंधविश्वास जैसी परम्पराओं में विश्वास करते हैं। बैगा भारत के आठ राज्यों मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिशा, झारखंड, बिहार, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र और पश्चिम बंगाल में निवास करते है। बैगा जनजाति अपनी अनूठी सामजिक व्यवस्था एवं संस्कृति के लिए जानी जाती है। यह अध्ययन उत्तर प्रदेश, के सोनभद्र जनपद पर आधारित है। सोनभद्र जनपद पर्वत मालाओं एवं जंगलों से आच्छादित एवं प्राकृतिक सम्पदाओं से परिपूर्ण है। मिर्जापुर जनपद के दक्षिणाचल को 4 मार्च 1989 से विभाजित कर एक नया जनपद सोनभद्र बनाया गया सोनभद्र जनपद के नामकरण का इतिहास है कि यहाँ सोन नदी के नाम पर ही सोनभद्र जनपद नाम पड़ा है। सोनभद्र का क्षेत्र विन्ध्य पर्वत के पठारी हिस्से से होता हुआ कैमूर श्रंखला की सीमा तक फैला हुआ है। सोनभद्र जनपद चार राज्यों की सीमा तक फैला हुआ है जिसमें पूरब में झारखण्ड का पलामू गढवा जिला तक तथा पश्चिम के मध्यप्रदेश के रीवा जनपद उत्तरप्रदेश के मिर्जापुर, चंदौली जनपद दक्षिण में छत्तीसगढ़ के सरजुआ तक का क्षेत्रफल फैला हुआ है।

सोनभद्र जनपद में 16 जनजातियाँ निवास करती है। गोण्ड, घूरिया, नायक, ओझा, पठारी, राजगोड, खरवार, खैरवार, परहिया, वैंगा, पंखा, पनिका, अगरिया, चेरो, भूइया, भूनियां। जिनका वधयंत्र,मादल, मोरवाजी, निशान, डफला, कसावर, तुरही, बेनुछड़, तसला, खजड़ी, नगाडा, महुअर, ढ़ोलक, सारंगी, कड़ा इत्यादि है। इनके नृत्य एवं संगीत में-करमा, कोलदहकी, नटुआ, डोमकच, सैला, कलैया, फर्री, विनावट, गोदना पूजन गाती है और इनके विभिन्न प्रकार के संस्कार गीत होते है। प्रेम श्रृंगार गीत, श्रमपरिहार गीत, धार्मिक गीत, ऋतु गीत, पारिवारीक गीत, अतिथि -सत्कार गीत, पुरूषार्थ तथा जीवनदर्शन गीत, शोक गीत, जादू-टोना गीत, तंत्र-मंत्र विकास गीत आदि होता है। सोनभद्र जनपद के जनजातियों में जीवनसाथी चुनने के लिए घोटूल गृहः एक पाठशाला हुआ करता है। अन्य प्रदेशों जिलो से आकार सोनभद्र जनपद मे बैगा जनजाति स्थापित हो गयी जिनके लोक कथाओ के विषय मे अध्ययन किया गया है। जिसका संक्षिप्त विश्लेषण निम्नलिखित रूप मे प्रस्तुत है।

बैगा जनजाति पुजारी प्रकार की जनजाति होती है। पाश्चात्य विद्वान इसे आदिकालीन द्रविड़ जाति मानते हैं ये सतपुड़ा के पूर्वी हिस्से में निवास करती हैं। इनकी विभिन्न उपजातियां विझवार, नऊतिया, नरोतिया, नाहार, पोंडवान, पुंडी इत्यादि हैं तथा इनका मूल व्यवसाय कृषि है। ये अपने देवताओं की पूजा जेठ के महीने में बकरे की बली देकर महुआ की शराब चढ़ाकर करते हैं। ये मुख्यतया बूढ़ादेव, ठाकुरदेव, दूल्हादेव, धरती माता नारायणदेव की पूजा करते हैं। बैगा जनजाति की व्यावसायिक स्थिति की चर्चा करते हुये रसेल ने लिखा है कि इनका मूल व्यवसाय खेती करना है। यह जनजाति आग लगाकर जंगल के हिस्सों को जला देती है और राख से उपजाउ हो गयी जमीन पर पानी बरसने पर बीज बोती और जोतती थी। सोनभद्र में निवास करने वाली बैगा जनजाति जो भूमि उसके पास हैं, उस पर खेती करती है तथा पुरोहित का कार्य करती है।

बैगा जनजाति उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जनपद मे अधिक मात्रा में निवासरत है। इनमें क्षेत्रीय सास्कृतिक भिन्नताएं पायी जाती हैं। सोनभद्र में बैगा ग्राम पुजारी एवं वैद्य के रूप में जाने जाते हैं। ये स्वयं अधिकतर बैगा भूमिहीन हैं। इन्होंने अपने क्षेत्र के कृषक समूहों से जजमानी संबंध भी स्थापित किया है। इनके घर साधारण होते हैं। एल्यूमिनियम, प्लास्टिक, स्टील, आदि धातुओं की वस्तुएं सभी घर के रसोइयों में सामान्य रूप से पायी जाती है। बैगा स्त्रियाँ चाँदी एवं कांच के आभूषण पहनती हैं। बैगा के आर्थिक क्रिया कलापों में कृषि एवं कृषि श्रमिक हैं, जंगल के निकट रहने वाले बैगा वन उत्पादों का संग्रह भी करते हैं। इन्हें विविध जंगली जड़ी बूटियों का ज्ञान है जिनका उपयोग घरेलू चिकित्सा में किया जाता है। बैगा पितृवंशीय एवं पितृस्थानीय समुदाय है। ये ग्राम एवं गोत्र बहिर्विवाही नियम का पालन

करते हैं इनके गोत्र का स्थानीय नाम गोटी है। विवाह का तरीका समझौता एवं वधू मूल्य है। ममेरे, फुफेरे भाई बहन में विवाह उचित माना जाता है। बैगा इसे 'गुलावट' कहते हैं। तथा तलाक एवं पुर्नविवाह भी अनुमान्य हैं। सोनभद्र के बैगा लोग योजनागत कार्यक्रमों से लाभान्वित हो रहे हैं । अपने बच्चों को स्कूल भेजती हैं। घरेलू चिकित्सा में जड़ी बूटियों का ज्ञान होते हुए भी ये प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों को महत्ता देते हैं ।

सोनभद्र में निवासित बैगा जनजाति जिले की कुछ तहसील में फैली हुई है यह आग जलाकर उसके चारों ओर सोते हैं इन लोगों के मकान लगभग 6 से 7 फीट ऊंची रखते हैं पानी के लिए मिट्टी के बर्तन का प्रयोग करते हैं एव चटाई का प्रयोग करते हैं ये लोग अन्य जाति के गांव में नहीं रहते बल्कि उनसे कुछ दूर जंगल में अपना घर बनाते हैं पहले बैगा जाति के लोग हस्तांतरित खेती करते थे परंतु अब सरकारों ने इस पर रोक लगा दी है यह लोग जंगल से जरूरी वस्तु प्राप्त करना ही उचित मानते हैं और जंगलों पर अपना अधिकार समझते हैं । कुल्हाड़ी इनका प्रमुख हथियार है इनके जीवन का महत्वपूर्ण अंग है यह लोग धनुर्विद्या में भी निपुण होते हैं तथा अनेक वस्तु इकट्ठा करते हैं जैसे फल कंदमूल इत्यादि इनके प्रमुख देवी-देवता बूढ़ा देव, ठाकुर देव, नारायण देव, भीमसेन, घनशाम देव, धरती माता, ठकुराईन माई, खैरमाई, रातमाई, बाघदेव, बूढीमाई, दुल्हादेव आदि हैं। इनके पूजा में मुर्गा, बकरा, सुअर की बलि देते हैं। कभी-कभी नारियल, ताड़ी व दारू से ही पूजा संपन्न कर लेते हैं। इनके प्रमुख त्यौहार हरेली, पोला, नवाखाई, दशहरा, काली चौदश, दीवाली, करमा पूजा, होली आदि हैं। जादू टोना, तंत्र, मंत्र, भूत प्रेत, में काफी विश्वास करते हैं। "भूमका" इनके देवी देवता का पुजारी व भूत प्रेत भगाने वाला होता है ।

इस जनजाति के जीविकोपार्जन का मुख्य साधन कृषि, मजदूरी, वनोपज संग्रह है। खेतों में मुख्यतः कोदो धान, उड़द, मूंग, तिवड़ा, तिल, तुबेर आदि बोते हैं। जमीन असिंचित होने के कारण उत्पादन कम होता है। जंगल से तेंदूपत्ता, तेंदू, चार, महुआ, गुल्ली, गोद, लाख, हर्रा, आंवला, एकत्र करते हैं । जंगली उपज स्वयं के उपयोग का मूल्य शेष स्थानीय बाजार में बेचते हैं। भूमिहीन परिवार अन्य जनजातियों के घर मजदूरी करते हैं । वर्षा ऋतु में अपने उपयोग के लिए मछलियाँ पकड़ते हैं ।

निष्कर्ष

हम अगर बैगा उत्पत्ति के मिथक का अध्ययन करते है तो समझ पाते है कि बैगा जनजाति कि सभी मिथकीय कहानियों में कोई एतेहासिक प्रमाण नहीं मिलता जल, केकडा, केचुआं का विशेष उल्लेख मिलता है। बैगा जनजाति यह मानते है कि चारो तरफ पहले जल था ब्रम्हा जी ने पहले पृथ्वी का निर्माण किया और पृथ्वी से बैगा जनजाति उत्पन्न हुई बैगा जनजाति पृथ्वी को अपनी माता मानते हैं। बैगा जनजाति के लोक कथाओं पर आधारित उत्पत्ति का सिद्धांत पुर्णतः दैवीय सिद्धांत का समर्थक है। बैगा जनजाति भारत की प्रमुख आदिम जनजातियों में से एक है। लेकिन उत्पत्ति के सिद्धांत में दैविय प्रभाव स्पष्ट रूप से नजर आता हैं। बैगा जनजाति प्रकृति को आत्मसात करने वाली जनजाति है। प्रकृति से ही अपनी उत्पत्ति स्वीकार करती है। प्रकृति को ही आदि शक्ति या हिन्दु धर्म के परिणाम स्वरूप उन्हे ब्रम्ह का नाम देकर अपने उत्पत्ति को स्वीकारती है । तथा लेख में उल्लेखित किवदंतियों कथाओ एंव लोक- संस्कृति को स्वीकारती है ।

संदर्भ सूचीः

- ❖ थॉमसन डब्लू. बी. रिपोर्ट ऑफ दि लैण्ड रेवेन्यु सेंटलमेट ऑफ दी सिवनी डिस्ट्रिक्ट, बॉम्बे 1867
- ❖ वॉर्ड एच. सी. ई. रिपोर्ट ऑफ दी लैण्ड रेवेन्यु सेंटलमेट ऑफ दि मण्डला डिस्ट्रिक्ट बॉम्बे 1867
- ❖ एल्विन वेरियर, दि बैगा, जॉन मैरी अल्बेमलै स्ट्रीट, लंदन 1939
- ❖ चौरसिया वी प्रकृति पुत्र बैगा, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी 2004
- ❖ तिवारी वी. के भारत की जनजातियाँ, हिमालया पब्लिशिंग हाउस 1998
- ❖ तिवारी वी. के. छत्तीसगढ़ की जनजाति, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी 2001
- ❖ शर्मा, टी० डी०, बैगा छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रन्थ अकादमी। 2012
- ❖ जनक ऐ. भारत के आदिवासी मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी 1957
- ❖ चौरसिया, डॉ विजय कुमार प्रकृति पुत्र बैगा भोपाल: मध्य प्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी 2009।
- ❖ जैन, कल्पना, बैगा जनजाति द्वारा उपयोग में लाए जाने वाले उपकरण, आदिम जाति अनुसन्धान एवं विकास संस्थान, भोपाल। 2007
- ❖ खरे, देवेन्द्र कुमार , बैगा जनजातियों की आर्थिक संरचना का विश्लेषणात्मक अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबंध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झॉसी (उ0प्र0) 2008
- ❖ कृष्ण कुमार तिवारी 'बैगा जनजाति के उत्पत्ति की अवधारणा' International Journal of Hindi Research Volume 5; Issue 1; January 2019; Page No. 30-33